अध्याय 12 परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध

हम सीख चुके हैं कि मसीही विश्वासी के रूप में हमारी प्रथम जिम्मेवारी परमेश्वर से प्रेम रखना है। जैसा कि हमने पाठ ११ में अध्ययन किया है कि हम उसकी व्यवस्था का पालन करते हैं क्योंकि हम उससे प्रेम करते हैं। अतः परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध प्रेम का है।

१ कुरिन्थियों १३ में प्रेम का एक सुन्दर वर्णन दिया गया है। आयत ४-८ बताती है कि प्रेम धीरजवन्त और दयालु है। इसमें डाह, अहंकार, अनरीति, स्वार्थ और झुंझलाहट नहीं होता। यह गलतियों का लेखा नहीं रखता और न ही बुराई से खुश रहता है किन्तु सच्चाई से ही खुश रहता है। प्रेम कभी त्यागता नहीं किन्तु अनन्त है। यह हमें अत्यधिक काल्पनिक प्रतीत हो सकता है, किन्तु इस प्रकार का ही प्रेम सभी मसीही विश्वासियों में परमेश्वर एवं भाई बहिनों के लिए होना चाहिए। परमेश्वर हमें इसी प्रकार का असीम प्रेम देता है।

यह कोई अकस्मात नहीं कि अध्याय १३ के पहले एवं बाद के अध्याय विश्वासियों के लिए परमेश्वर की ओर से वरदान के विषय में लिखे गए हैं। प्रेम के विषय के अध्याय को वरदानों के अध्यायों के साथ जोड़ा गया है क्योंकि प्रेम भी एक वरदान है। प्रेम रखना और दान देना साथ-साथ चलते

है क्योंकि जब हम दूसरों से प्रेम रखते हैं तो हम उन्हें वह चीज देना भी चाहते हैं जो उन्हें अत्यधिक प्रसन्न कर सकें।

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे....

परमेश्वर का वरदान हमारे लिए
हमारा वरदान परमेश्वर के लिए

यह पाठ आपकी सहायता करेगा कि आप...

- कम से कम उन तीन वरदानों का वर्णन कर सकें जो परमेश्वर से उसके बच्चों को मिलते हैं।
- परमेश्वर को अपने प्रेम का वरदान देने के लिए, जिसके योग्य वह है, वचनबद्ध रह सकें।

परमेश्वर का वरदान हमारे लिए

उद्देश्य १. परमेश्वर के कई वरदान जो उसके बच्चों के लिए हैं उनकी पहचान करना।

जब हम परमेश्वर पर विश्वास करते हैं तो प्रथम वरदान जो वह हमें देता है वह है उद्धार।

क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है और वह तुम्हारी ओर से नहीं वरन परमेश्वर का वरदान है और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे (इफिसियों २:८-९)।

यदि हम विश्वासी हैं तो परमेश्वर हमारा स्वर्गीय पिता है और हम उसके बच्चे हैं। मत्ती ५:१६ परमेश्वर को यह बहुमूल्य नाम देता है "तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देख कर तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है बड़ाई करें।"

यह एक अद्‌भुत बात है कि हम परमेश्वर से वैसे ही बात कर सकते हैं जैसे एक प्रेमी पिता के साथ। यीशु ने हमें सिखाया कि हम उससे इस प्रकार से बातचीत कर सकते हैं जब उसने कहा कि "हे हमारे पिता, तेरा नाम पवित्र माना जाए" (मत्ती ६:९)।

यद्यपि परमेश्वर सृजनहार हैं किन्तु वह केवल उनका पिता है जो उसके परिवार में जन्म लेते हैं।

इसी से परमेश्वर की सन्तान और शैतान की सन्तान जाने जाते हैं जो कोई धर्म के काम नहीं करता वह परमेश्वर से नहीं और न वह जो अपने भाई से प्रेम नहीं रखता (१ यूहन्ना ३:१०)।

उसके परिवार का भाग बनने के लिए हमें उसके पुत्र यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता और प्रभु के रूप में स्वीकार करना जरूरी है। तब जीवन

प्रारम्भ होता है। "कुछ लोगों को....जिन्होंने उस पर विश्वास किया उसने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया" (यूहन्ना १:१२)।

प्रत्येक प्रेमी पिता अपने बच्चों की जरूरतों को पूरी करने में आनन्दित रहता है। "और मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी हर एक घटी को पूरा करेगा" (फिलिप्पियों ४:१९)।

परमेश्वर हमारी चौकसी अपने बच्चों के समान करता है। वह दिन और रात चौकसी करता है। "वह तेरे पांव को टलने नहीं देगा, तेरा रक्षक कभी न ऊंघेगा (भजन संहिता १२१:३)।

यहोवा की आंखें धर्मियों पर बनी रहती हैं और उसके कान भी उनके दोहाई की ओर लगे रहते हैं" (भजन संहिता ३४:१५)। भजन संहिता में बहुत से ऐसे पद हैं जो बताते हैं कि परमेश्वर हमारा ध्यान रखता है।

जब हमारा पिता अपने वचन में हमसे कहता है कि वह कुछ चीजें हमारे लिए करेगा, हम उन्हें प्रतिज्ञाएं कहते हैं। प्रतिज्ञाएं परमेश्वर के वरदान हैं। प्रार्थना एवं उसके वचन के विश्वास के द्वारा परमेश्वर की आशीषों एवं प्रतिज्ञाओं को प्राप्त कर सकते हैं। "और जो कुछ तुम मेरे नाम से माँगोगे वही मैं करूंगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो" ये यीशु के वचन है जो यूहन्ना १४:१३ में दिए गए हैं।

मसीह लोग भी परमेश्वर की इन आशीषों को दूसरों की सहायता करने के द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। भजन संहिता ४१:१ कहता है, "क्या ही धन्य है वह जो कंगाल की सुधि रखता है; विपत्ति के दिन यहोवा उसको बचाएगा।"

हम परमेश्वर से बहुत से वरदान प्राप्त कर सकते हैं, यदि हम उस पर विश्वास करें और उससे मांगे। इस तरह से प्रतीत करना विश्वास कहलाता है। हमारा विश्वास परमेश्वर को प्रसन्न करता और न केवल उद्धार और दूसरे वरदान जिन्हें दर्शाया गया है, हमें दिलाता है, वरन चंगाई और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा भी हमें दिलाता है।

"और विश्वास बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है और अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है" (इब्रानियों ११:६)।

विश्वास से हमें चंगाई प्राप्त होती.है यह हमें याकूब ५:१५ में मिलता है, "और विश्वास को प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा और प्रभु इसको उठाकर खड़ा करेगा।"

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा भी विश्वास से प्राप्त किया जाता है।

यह इसलिए हुआ कि इब्राहीम की आशीष मसीह यीशु में अन्य जातियों तक पहुंचे और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें जिसकी प्रतिज्ञा हुई है। (गलतियों ३:१४)।

तो भी सर्वोत्तम वरदान रोमियों ६:२३ में हमें मिलता है "पाप की मजदूरी तो मृत्यु हैं परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु में अनन्त जीवन है।"

"क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है" (याकूब १:१७)।

जो आपको करना है

१. भजन संहिता ९१ पढ़ें। इन प्रतिज्ञाओं को जो परमेश्वर के पास से एक वरदान है इनका किन शब्दों के द्वारा वर्णन कर सकते हैं?

....

....

२. बाई ओर दिए गए पदों को पढ़ें। प्रत्येक के सामने दाई ओर दी गयी प्रतिज्ञा की संख्या जो उस पद में दी गई है लिखें।

...अ.	रोमियों ५:१७	(१)	बुद्धि, ज्ञान और खुशी
...ब.	सभोपदेशक २:२६	(२)	योग्यताएं
...स.	यहेजकेल ११:१९	(३)	भरपूर अनुग्रह
...ड.	मत्ती ११:२८	(४)	नया हृदय और नया विवेक
...इ.	कुरिन्थियों १२:६	(५)	विश्राम

३. नीचे दी गई पंक्तियों में कम से कम इन तीन वरदानों को लिखें जिन्हें आपने परमेश्वर से प्राप्त किया है जब से आपने यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता ग्रहण किया है।

....

....

....

हमारा वरदान परमेश्वर के लिए

उद्देश्य २. कम से कम उन छह वरदानों का जिसे विश्वासी परमेश्वर को दे सकते हैं उनकी पहचान करना।

क्या यह अनोखी बात है कि परमेश्वर को कुछ दें जिसके पास सब कुछ है? अपने वचन में परमेश्वर हमें स्वयं बताता है कि हम उसे क्या दे सकते हैं।

हम परमेश्वर को उसकी आराधना का दान दे सकते हैं। भजन संहिता ९५:६ कहता है, "आओ हम झुककर दण्डवत् करें और अपने कर्त्ता यहोवा के सामने घुटने टेकें।" आराधना का दान प्रार्थना के द्वारा, परमेश्वर की आशीषों के लिए उसको धन्यवाद देने के द्वारा, उसकी स्तुति करने एवं उसके कार्य के लिए अपने को समर्पित करने के द्वारा दे सकते हैं। कुलुस्सियों ३:१६ हमें बताता है "धन्यवाद के साथ परमेश्वर के लिए भजन और स्तुतिगान गाओ।"

यदि हम पूरी रीति से अपने आप को दे देते हैं तो यह भी आराधना है।

इसलिए हे भाइयो, मैं परमेश्वर की दया स्मरण दिलाकर बिनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित और पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। और इस संसार के सदृश न बनों परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए जिससे तुम परमेश्वर की भली और भावती और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो (रोमियों १२:१-२)।

अपने पैसों का दान करना भी एक तरह से आराधना का दान है। और जब हम देते हैं तो पाते भी हैं। परमेश्वर मलाकी ३:१० में यह प्रतिज्ञा करता है :

> सारे दशमांस भंडार में ले आओ .... ऐसा करके मुझे परखो कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिए खोलकर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष की वर्षा करता हूं कि नहीं।

दशमांस आपकी आय का दस प्रतिशत है।

मसीही विश्वासी के रूप में जो कुछ भी हम करते हैं वह प्रभु की महिमा के लिए हो सकता है। मत्ती २५ में यीशु ने उन लोगों के प्रतिफल के विषय में एक दिलचस्प विवरण दिया है जिन्होंने उसे भोजन या पीने को पानी दिया था बन्दीगृह में उससे मिलने गये। जब उन्होंने उससे पूछा कि आखिर उन्होंने ऐसा कब किया था तो उसने उत्तर दिया "मैं तुमसे सच कहता हूँ कि तुमने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया वह मेरे ही साथ किया।" दूसरे शब्दों में हमारे दान हमारे जीवन-चर्या बन जाते हैं।

निरन्तर आराधना करने का अर्थ यह नहीं कि निरन्तर घुटनों में रह कर प्रार्थना करते रहें। यदि हम प्रतिदिन अपने आचरण के द्वारा प्रभु को खुश रखें — तो वह इसे अटूट आराधना के रूप में ग्रहण करेगा। हमें इसमें कुछ भी कठिनाई नहीं कि "सदा सब बातों के लिए हम अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहें" (इफिसियों ५:२०) क्यों कि वह इसके योग्य है।

जो आपको करना है

४. निम्नलिखित पदों में कौन से वरदान दिए गए हैं जिन्हें हम परमेश्वर को दे सकते हैं?

अ. यशायाह ३८:२०

....

ब. हबकूक २:२०

....

स. भजन संहिता १०३:१

....

ड. यूहन्ना ४:२३

....

इ. १ तिमुथियुस २:८

....

फ. इब्रानियों १०:२५

....

५. भजन संहिता ७६:११ कहता है कि आपको परमेश्वर को उन सभी वरदानों को देना है ....

६. निम्न में से किन्हें हम आराधना या परमेश्वर के लिए वरदान के रूप में ले सकते हैं?

अ. कपड़ों की धुलाई करते समय कोरस गाना।

ब. जब आपका स्वामी उचित व्यवहार न करें तो भी नाराज न होना।

स. रविवार को चर्च जाना।

ड. भोजन करने से पहले परमेश्वर को धन्यवाद देना।

इ. परमेश्वर की भलाई, को शांत रहकर सोचना।

अपने उत्तरों की जांच करें

१. आपका उत्तर! आप इन्हें इन शब्दों में अन्त कर सकते हैं। परमेश्वर का संरक्षण या परमेश्वर की सुरक्षा।

४. अ. साज बजाएं और भजन गाएं

ब. परमेश्वर के सामने शांत रहें

स. प्रभु की स्तुति करें

ड. उसकी आराधना करें

इ. हाथों को उठाकर प्रार्थना करें

फ. एक दूसरे से मुलाकात करना एवं एक दूसरे को उत्साहित करना।

२. अ. २) भरपूर अनुग्रह

ब. १) बुद्धि, ज्ञान और खुशी

स. ४) नया ह्रदय और नया विवेक

ड. ५) विश्राम

इ. २) योग्यताएं

५. उससे प्रतिज्ञा की हो

३. आपका उत्तर! आपने चंगाई प्राप्त की होगी, आपको नौकरी मिली होगी, किसी डर से छुटकारा मिला होगा या नई आशा मिली होगी — उसके वरदान कई हैं।

६. सभी कथन बताते हैं कि हम कैसे उसकी आराधना कर सकते हैं।